[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 5930 **H**

Unique Paper Code : 2055002003

Name of the Paper : Hindi Gadya Udbhav aur Vikas (C)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi C – G.E.**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) ऐसे लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, रुपया, माल, असबाब, जमीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परंतु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी।

P.T.O.

अथवा

महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं असल चीज है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजो को चक्रवर्ती कहते है। आजकल अंगरेजो के राज्य का विस्तार बहुत बढा हुआ है, पर इन्हे चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते। बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चिल लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराए नही। अभिमान किया और दीन-दुनिया से गया।

(ख) मानव-शरीर का अध्ययन करने वाले प्राणि-विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव-चित्त की भाँति मानव-शरीर में भी बहुत-सी अभ्यासजन्य सहज वृत्तियाँ रह गई हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएवं शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने-आप काम करती हैं। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है। केश का बढ़ना दूसरा है। दाँत का दुबारा उठना तीसरा है। पलकों का गिरना चौथा है।

अथवा

मारवाड़ियों की भाषा मैं समझ लेता हूँ तो क्या मारवाड़ के ऊँट की बोली समझ में न आवेगी? इतने में तरंग कुछ अधिक हुई। ऊँट की बोली साफ-साफ समझ में आने लगी। ऊँट ने उन मारवाड़ी बाबूओं की ओर -धनी करके कहा: 'बेटा! तुम बच्चे हो, तुम मुझे क्या जानोगे? यदि मेरी उमर का कोई होता - का वह जानता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ। तुमने कलकत्ते के महली में जन्म लिया, तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले में बहुत चीजें हैं, उन्हें देखो और यदि -तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ- आज दिन तुम विलायती फिटिन, टमटम और जोड़ियों पर घूमते-फिरते हो, जिसकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आए हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे।

(ग) स्त्री ने गुर्रा कर नारद की ओर देखा। बोली, 'अब कुछ मत बको महाराज! तुम साधु हो, उचक्के नहीं हो। ज़िंदगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखा।'

नारद हँस कर बोले, 'हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।'

अथवा

उसकी चुनर का रंग कभी मलिन नहीं होता। उसकी चोली सिवाई पट्टी का दर्जी सिता है। मानो वह रोज घास को आती जाती है। लेकिन उसके हाथ में ठेले की क्या बात, आप घिस्से भी नहीं पाएंगे। रंग वही सांवला है लेकिन उसमें गड़हे के सड़े पानी की मुर्दनी नहीं है, कालिंदी का कलकल छलछल है। जिसके

कूल पर कितने ही गोपाल वंशी टेरते कितने ही नंदलाल रासलीला का स्वप्न देखते! बुधिया जिस सरेह में निकल जाती जिंदगी तरंगे लेती।

2. निबंध का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

एकाँकी की परिभाषा देते हुए उसका सामान्य परिचय प्रस्तुत कीजिए। (15)

3. बड़े भाई साहब कहानी शिक्षा व्यवस्था पर टिप्पणी है। कैसे?

अथवा

सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' के खड़गसिंह का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध के वैचारिक पक्ष का विवेचन कीजिए।

अथवा

'मेले का ऊँट' का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'भोलाराम का जीव' में व्यक्त भ्रष्टाचार की समस्या पर अपना मत लिखिए। (15)

अथवा

'बुधिया' एक अविस्मरणीय चरित्र क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) कहानी

(ख) व्यंग्य

(800)